बुधवार 8/7/2020 B.A. Part II संस्कृत (सम्मान)

अभिज्ञानशाकुन्तलम् चतुर्थ अङ्क प्र०सं०-1

अनसूया - सखि, मैवं मन्त्रयस्व। (सखी, ऐसी बात न कहो।)

प्राकृत भाषा में निरूपित यह श्लोक इसप्रकार से है - श्लोकसं०-16

प्रश्न "एसा वि पिएण विणा गमेइ रअणिं विसाअदीहअरं।
गरुअं पि विरहदुक्खं आसाबन्धो सहावेदि॥"

संस्कृत अनुवाद -

"एषापि प्रियेण विना गमयति रजनीं विषाददीर्घतराम्।
गुर्वपि विरहदुःखमाशाबन्धः साहयति॥"

प्राकृतशब्द	- संस्कृत	प्राकृतशब्द	- संस्कृत
एसा	= एषा	गमेइ	- गमयति
वि	= अपि	रअणिं	- रजनीं
पिएण	= प्रियेण	विसाअदीहअरं	- विषाददीर्घतराम्
विणा	= विना	गरुअं पि	- ~~गुर्वपि~~ गुर्वपि
विरहदुक्खं	= विरहदुःखम्	आसाबन्धो	- आशाबन्धः
सहावेदि	= साहयति		

सन्दर्भ - अनसूया, शकुन्तला को लक्ष्य करके कहती है - यह भी अपने प्रेम (प्यारे) के बिना दुःख से युक्त अधिक दीर्घ ~~(~~ रात्रि (रजनी/निशा) को व्यतीत करती है। आशा का बन्धन (की डोर) बिछोह के कठिन दुःख को भी सहने लायक बना देता है।

सिलेबस में - प्राकृत भाषा में पद्य दियाजायेगा।

उत्तर में - आपको संस्कृत अनुवाद करना है (6 अंक)

तथा पुनः हिन्दी में अनुवाद करना है। (6 अंक)

(वस्तुनिष्ठ प्रश्नों तथा दीर्घउत्तरीय प्रश्नों के उत्तर के लिए यह सामग्री